

दिन 2. जुकाम, प्रतिश्याय, जल, तुषार, वेतस वृक्ष, बहुवारक वृक्ष, अशनपर्णी, नीम का पेड़, कपूर, पर्पट, पित्तपापड़ा 3. कसीस 4. छरीला 5. चन्दन 6. मोती 7. उशीर, खस 8. बनसर्नई 9. लिसोड़ा 10. चंपा 11. राल 12. पद्म काठ 13. पीत चंदन 14. भीमसेनी कपूर 15. साल वृक्ष 16. हिम 17. मटर 18. चंद्रमा 19. जैन धर्म को मानने वालों का एक व्रत।

शीतअयनांत पुं. (तत्.) आकाश अथवा अंतरिक्ष में वह बिंदु जहाँ पर 22 दिसंबर या उसके आस-पास सूर्य स्थित होता है जब उत्तरी गोलार्ध में शीत ऋतु का आरंभ हो जाता है, दक्षिण अयनांत, अथवा मकर संक्रांति का काल।

शीतक वि. (तत्.) 1. कोई ठंडी या शीतल वस्तु, शीत उत्पन्न करने या ठंडक पैदा करने वाला, जाड़े की ऋतु, सर्दी का मौसम 2. मन्थर, दीर्घसूत्री 3. आनंदित, निश्चित 4. आलसी पुं. 1. बिच्छू 2. बिजली की सहायता से कार्य करने वाला एक उपकरण जिससे गरमी के समय कमरे ठंडे रखे जाते हैं।

शीतकटिबंध पुं. (तत्.) 1. पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के वे कटिबंध जो वर्ष-भर बहुत ठंडे रहते हैं 2. भूगोल में पृथ्वी की भूमध्य रेखा से 23 1/2 अंश उत्तर के बाद और 23 1/2 अंश दक्षिण के बाद पड़ने वाले हिस्से जिनमें सर्दी बहुत होती है।

शीतकर पुं. (तत्.) चंद्रमा, हिमकर, कपूर वि. शीतल हाथों वाला, शीतल करने वाला, ठंडा करने वाला।

शीतकाल पुं. (तत्.) जाड़े के दिन, सर्दी या मौसम, हेमंत और शिशिर ऋतु, जाड़े का मौसम।

शीतकिरण पुं. (तत्.) 1. चंद्रमा 2. शीतल किरणों वाला।

शीतकृच्छ्र पुं. (तत्.) एक प्रकार का व्रत याजवल्क्य की स्मृति में 'विघ्नेश्वर' द्वारा लिखे गए ग्रंथ 'मिताक्षरा' में इसे व्रत बताया गया है,

संपत्ति के अधिकार की व्याख्या करने वाला यह ग्रंथ ऐतिहासिक महत्व का ग्रंथ माना जाता है।

शीतक्षार पुं. (तत्.) शुद्ध, सोहागा।

शीतगंध पुं. (तत्.) 1. चंदन, संदल।

शीतगात्र पुं. (तत्.) ऐसा रोग जिसमें शरीर ठंडा पड़ने लगता है।

शीतगु पुं. (तत्.) 1. चंद्रमा 2. कपूर।

शीतचंपक पुं. (तत्.) 1. दर्पण, शीशा 2. दीपक, दीया।

शीतच्छाय वि. (तत्.) शीतल छाया वाला पुं. बड़ का पेड़, ऐसा पेड़ जिसकी छाया ठंडी होती है।

शीतज्वर पुं. (तत्.) 1. एक बुखार जिसमें ठंड लगती है, विषम ज्वर, जूड़ी।

शीत-तरंग स्त्री. (तत्.) 1. अचानक तापमान गिरने के कारण शीतकाल में होने वाली वह भीषण ठंड जिसमें तेज-मारक हवा चलती है और शरीर के अंगों को गलाने जैसी प्रतीत होती है 2. भीषण ठंड की वह तरंग या लहर जो किसी दिशा-विशेष की ओर चलती है और चार-छह दिन के लिए भयावह सर्दी का कारण बनती है।

शीतता स्त्री. (तत्.) 1. शीत का भाव या धर्म, शीतत्व, ठंडापन 2. सर्दी।

शीतत्व पुं. (तत्.) शीतता।

शीतदंत पुं. (तत्.) ऐसा दंत रोग जिसमें ठंडी हवा और ठंडा पानी दाँतों में लगने लगता है तथा दंत-पीड़ा का कारण बनता है।

शीतदीधीति पुं. (तत्.) चंद्रमा, जिसकी किरणें शीतल हों।

शीतद्युति पुं. (तत्.) चंद्रमा।

शीतन पुं. (तत्.) ठंडा या शीतल करने की क्रिया या भाव।

शीतपर्णी स्त्री. (तत्.) अर्कपुष्पी।